मत्स्य उत्पादन तथा आय–व्यय विवरण

प्रत्याशित आय रुपये

1. 3,000 किलोग्राम मछली की कीमत 100 रुपये प्रति कि.ग्रा. =3,00,000

व्यय

1. तालाब के लिए पट्टे की रकम=10,000
2. तालाब का सुधार = 2,000
3. पानी का खर्चा = 4,000
4. मछली बीज का खर्चा 10,000 अंगुलिकाएं /हैक्टेयर दर 600 रुपये/1000 = 6,000
5. गोबर पर व्यय मात्रा 10,000 कि.ग्रा. दर 1.5 रुपये/ कि.ग्रा. =15,000
6. चूने पर व्यय मात्रा 500 कि.ग्रा. दर 5 रुपये/ कि.ग्रा. = 2,500
7. उर्वरकों पर व्यय मात्रा 200 कि.ग्रा. दर 10 रुपये/ कि.ग्रा. = 2,000
8. प्रतिपूरक आहार (सरसों की खल) मात्रा 2,000 कि.ग्रा. दर 16 रुपये/ कि.ग्रा. = 32,000
9. प्रतिपूरक आहार (चावल की भूसी) मात्रा 2000 कि.ग्रा. दर 13 रुपये/ कि.ग्रा.= 26,000
10. मछली पकड़ने का खर्चा= 3,000
11. परिवहन एवं मछली की बिक्री का खर्चा = 2,000
12. आक्समिक एवं अनापेक्षित व्यय = 5,500

कुल = 1,10,000

शुद्ध लाभ = 3,00,000–1,10,000 =1,90,000 रुपये

नोटः यह अनुमानित खर्च एक स्थान से दूसरे स्थान पर वस्तुओं के बाजार के मूल्य के अनुसार घट–बढ़ सकता है

कुंडी डोरी द्वारा भी 10 से 20 कि0ग्रा0 मछली तालाब से निकाली जा सकती है। इसके लिए एक लम्बी डोरी में विभिन्न स्थानों पर एक–एक मीटर लम्बी नाईलोन डोरी से अलग–अलग कुंडियां बांध दें। इन कुंडियों में आटे का (गुंधे आटे का) चारा लगा दें । इस लम्बी डोरी को तालाब के आर–पार इस प्रकार बांधें ताकि प्रत्येक कुंडी पानी में आधा मीटर डूब जाए । शाम के समय डोरी बांध कर प्रातः उठा दें और मछली निकाल लें ।

सम्पर्क सूत्रः मत्स्य भवन
मात्स्यिकी निदेशालय, हिमाचल प्रदेश,
चंगर सैक्टर– बिलासपुर– 174 001
फोन/फैक्सः 01978–224068
ई मेल: fisheries-hp@nic.in
वैबसाईट: hpfisheries.nic.in

रा0 मु0 हि0 प्र0, शिमला–1831–मत्सय–2015–23–07–2015––500 प्रतियां।

मछली की फसल का दोहन

मात्स्यिकी निदेशालय
हिमाचल प्रदेश, बिलासपुर।

एक वर्ष तक तालाब में मत्स्य पालन करने के पश्चात् आपकी मछली की फसल तैयार हो जाएगी। उसके पश्चात् आप अपनी फसल बाजार में बेच सकते हैं। इसके लिए निम्न विधि अपनाएंः–

- जब बाजार में मांग अधिक हो उसी समय अपनी मछली बाजार में विक्रय करें। ऐसा करने से आपको अधिक मूल्य प्राप्त होगा । मछली की खेती करने में आपको सुविधा है कि आप अपनी मर्जी अनुसार फसल निकाल सकते हैं। जबकि कृषि व बागवानी में निश्चित समय पर फसल निकालने की मजबूरी होती है।

- बड़े स्तर पर मछली पकड़ने हेतु ड्रैग नैट (खींचने वाला जाल) की आवश्यकता पड़ेगी। इसके लिए चण्डीगढ़ व बद्दी (नालागढ़) में पेशेवर मछुआरे उपलब्ध हैं। उन लोगों के पास अपना वाहन व जाल इत्यादि सभी सामान होता है। वे लोग मत्स्य पालक किसान के साथ प्रति कि0ग्रा0 भाव निश्चित कर लेते हैं तथा स्वयं ही तालाब से मछली पकड़ कर छोटे आकार की मछली वापिस जिंदा छोड़ कर तथा बड़े आकार की क्रय कर लेते हैं। यह विधि दोनों पार्टियों के लिए लाभदायक है। भविष्य के लिए एक नियमित चक्कर बनाने हेतु यह ध्यान रखें कि जितनी संख्या में जल क्षेत्र से मछली पकड़ी गई है उतनी ही संख्या या उससे थोड़ा सा अधिक संख्या में और मछली बीज का जल क्षेत्र में संग्रहण करें ।

- जहां पर जनसंख्या थोड़ी सघन हो वहां पर मछली विक्रय के साथ–साथ तलाई करके भी मछली विक्रय किया जा सकता है तथा परिवार के अन्य सदस्य हेतु भी रोजगार उपलब्ध करवाया जा सकता है।

आप मछली का आचार बना कर भी विक्रय कर सकते हैं। इसके लिए गलगल, खट्टे का रस प्रयोग किया जाता है जो कि प्रायः प्रत्येक ग्राम में उपलब्ध होता है।

आचार बनाने की विधिः मछली को अच्छी तरह से साफ कर लिया जाता है तथा शरीर पर उगे पंख व चन्ने (स्केल) पूर्णतया निकाल लिए जाते है। पेट साफ कर लिया जाता है तथा गलफड़े भी निकाल कर फेंक दिए जाते है। साफ की हुई मछली को पतले–पतले टुकड़ों में काटा जाता है तथा तेल में तीन बार तला जाता है। पहली तलाई सामान्य होती है तथा दूसरी व तीसरी तलाई दबा–दबा कर की जाती है ताकि मछली के टुकड़ों का जल सोख हो जाए व बारीक कांटा तलाई में खत्म हो जाए । फिर मसाले इत्यादि पीस कर अलग रख लिए जाते है। कड़ाही में तेल डालकर गलगल की खटाई उसमें तड़क दी जाती है। खटाई में उबाल आने पर तली हुई सम्पूर्ण मछली को इसमें डाल कर मिला दिया जाता है तथा स्वादानुसार नमक, हल्दी व मसाले मिला लिए जाते है। खटाई इतनी मात्रा में डालनी चाहिए कि तली गई मछली उसमें सराबोर हो जाए। बाद में ये सम्पूर्ण खटाई मछली के टुकड़ों द्वारा सोख ली जाती है तथा मछली का कांटा गल जाता है। आजकल मछली का आचार 380 से 400 रूपये प्रति कि0ग्रा0 तक बिक जाता है।

- चैक डैम अधिक गहरे होते हैं तथा इनके बीच कांटेदार झाडियां व अन्य बाधाएं होती है। इनसे मछली पकड़ने हेतु गिल नैट का प्रयोग किया जाता है। ये ऐसे जाल होते हैं जिनके सिरे वाली रस्सी में इन्हें तैरती अवस्था में रखने हेतु लकड़ी अथवा प्लास्टिक के फलोट बंधे होते है। नीचे वाली रस्सी में जिसे फुट रोप कहते है, सेबे के टुकडों द्वारा लम्बे–लम्बे आकार के छोटे–छोटे पत्थर बांधे जाते है। इनका आपस में अन्तर 2 और 3 मीटर तक रखा जाता है। निचले वाली रस्सी में बंधे पत्थर उसे नीचे खींचने का प्रयत्न करते है। इस प्रकार पानी के बीच में प्रयोग किए गए जाल की दीवार बन जाती है जो प्रायः तीन मीटर चौड़ी तथा 50 से 60 मीटर लम्बी होती है। इन जालों को शाम के समय किश्ती की सहायता से लगाया जाता है तथा प्रातः उठा लिया जाता है और जाल में फंसी मछली को निकाल लिया जाता है। चैक डैम में किश्ती उपलब्ध नहीं होगी । अतः आप ट्रक अथवा ट्रैक्टर के टायर की ट्यूब में हवा भरवा कर उसके ऊपर लकड़ी का तख्ता बांध कर उसके द्वारा गिल नैट चैक डैम में लगा सकते है तथा उठा सकते है। फ्लोट व पत्थर किनारे पर ही जाल में बांधने पड़ेंगे तथा बाद में एक व्यक्ति ट्यूब पर बैठ कर जाल का एक सिरा पकड़ कर पानी में तैरता जाएगा तथा दूसरा व्यक्ति चैक डैम के किनारे से जाल सीधा करके छोड़ता जाएगा और दूसरे किनारे पर पहुंचा देगा। दोनों किनारों पर जाल को लम्बी–लम्बी रस्सी द्वारा लकड़ी के खूंटों से बांधना होगा। इस विधि द्वारा आप चैक डैम से मछली पकड़ सकते है।

- यदि आपके नजदीक ही मछली खपत की सम्भावना है साधारणतया 10 से 20 कि0ग्रा0 दैनिक खपत ग्राम व कस्बे में हो जाती है तो आप कास्ट नैट फैंकवा जाल द्वारा उपरोक्त मात्रा में मछली पकड़ कर अथवा पकड़वा कर विक्रय कर सकते हैं।